प्रारंभिक युग के साहित्य में जीवन के प्रति एक अभिव्यक्त, सार्थक, कृतिकारी दृष्टिकोण तथा विश्वास के नए शक्तित्र द्वारा नए नए उद्धारण की प्रेरणा लक्षित होती है। नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों एवं टेक्नोलॉजिकल प्रगति ने जीवन के प्रति समय दृष्टिकोण परिवर्तित कर दिया है जिसके परिणामस्वरूप उपन्यासों में जो नया आधुनिक व्यक्ति आया है, वह निर्माण से अधिक अनुभव की प्रक्षेपण में संलग्न है। तभी आधुनिक उपन्यास साहित्य में जीवन की विचरणों के बीच अनुभव एवं पुनर्नवासण तथा प्रगति के आयामों का व्यक्ति एवं समाज के सन्दर्भ में प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ है और अनुभव क्षेत्र बढ़ा-आगामी हो गए हैं एवं उनमें विश्वास ज्ञानानुसार अनुभवक का समावेश स्वभावत: हो गया है। इस विशिष्ट सन्दर्भ में हिंदी जगत में भी अन्तर्भाषानुसार प्रत्यक्ष अध्ययन को बीतिक धरातल पर जीवन और उसकी महत्त्वपूर्ण गतिशील परिपक्वता को स्पष्ट करने के लघुस्वरूप से सम्पूर्ण कर दिया है।

उपन्यास साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। उपन्यास की वास्तविक शक्ति महान है, उसका दृष्टि-प्रत्यक्ष अत्यन्त विशाल है। उपन्यासकार अपनी विशिष्ट जीवन दृष्टि, यथार्थ के गहरे अनुभव, सर्वनामक कल्पना की अपार शक्ति एवं विचारों की गहनता से उपन्यास में जीवन का विवेचन करता है। इसीलिए उपन्यास साहित्य व्यक्ति की व्यक्तित्वता को बनाए रखते हुए उसकी सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति करने में पूर्णत: सफल होते हैं।

उपन्यास के ‘समाजशास्त्रीय अभ्यासन’ का विषय क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण है। समाजशास्त्रीय उपन्यासकार जीवन के प्रति आमश्वासन और सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध अपनी जिम्मेदारी को पूर्णतः निभाते हुए सामाजिक अन्तर्विश्वास और मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति करता है। उसने एक ऐसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसातुर कर लिया जो व्यक्तिगत और सामाजिक समर्थनों के परिवर्तन करने की शक्ति रखता है और साथ ही समाज में केवल प्रेरणा ही नहीं लेता बल्कि सामाजिक संरचना और परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए समाज का विकास करता है।
मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र इन दोनों ज्ञानानुशासनों का अपना अपना विशिष्ट महत्व है। ये दोनों ज्ञानानुशासन साहित्य में अत्यावश्यक भी हैं और अन्योन्यावश्यक भी हैं क्योंकि कभी तो हम ये मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति एक सामाजिक इकाई है और सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों तथा किसी भी समाज में घरने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का य्वक्ति पर प्रभाव अवश्य ही पड़ता है इसलिए यह कभी हम ये कहते हैं कि एक ही परिवार में पते बढ़े, एक सामान्य संस्कृति को अपनाए हुए दौरान परिवारों के व्यक्तित्व में विपरीत प्रवृत्तियाँ उनकी आत्मनिर्देशु और उनके मानसिक विचार स्तर का परिणाम है। इसलिए कोई भी सामाजिक अध्ययन व्यक्ति पर समाज होता है और मनोवैज्ञानिक अध्ययन व्यक्ति केन्द्रित होता है और यही हमारे चयन का आधार भी है, जिसके हम समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास के अनुसार नाशनात्मक अध्ययन के लिए प्रेरित किया है।

मानव की प्रत्येक किया मूल रूप से उसके मानस से सम्बद्ध है। अतः उसकी सृजनात्मक किया को समझने के लिए उसकी मानसिक किया का अध्ययन आवश्यक है। इसी मानसिक किया-प्रतिक्रिया का अध्ययन करने के उद्देश्य से आधुनिक युग में मनोवैज्ञानिक उपन्यास हमारे समुच्चय प्रस्तुत हुआ।

उपन्यास के ‘मनोवैज्ञानिक अध्ययन‘ में मानव जीवन के आत्मनिर्देश स्तर की अपनी समस्तता, व्यापकता एवं गहनता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। बौद्धिक रथन-पुथन तथा भावनात्मक अनुभव का विचारण इन उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण अंश है। मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान है जिसके माध्यम से सामाजिक व्याख्या की विरुध्धता को प्रत्यक्ष कर आधुनिक जीवन की असाधारण, मानवीय दुःख, वेदना एवं आघात की संगठन के कारणों का अभिव्यक्ति करने की प्रतिबंध प्रत्यक्ष रूप से पाए जाती है। इस वैज्ञानिक पद्धति से व्यक्ति को समाज के सर्वशासी आधिपत्य से मुक्त दिलकर उसकी मूल चेतना का जो अणुविश्लेषण संध्याओं और दवाओं से उत्पन्न, अस्पष्ट एवं दुर्दृष्टि है, अभिव्यक्ति होने का अवसर दिया जाता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास ऐसी चेतना के धारणकर्तार व्यक्ति का परिपुर्ण ‘एक’ के रूप में अध्ययन प्रस्तुत करता है और मनोवैज्ञानिक अध्ययन उस रचनात्मक प्रस्तृति की आलोचनात्मक व्याख्या प्रदान करता है। इस प्रकार व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में हम स्थितियों का अध्ययन करते हैं, तो उसमें समाज का दखल हो ही जाता है, इसलिए व्यावहारिक सामाजिकता की को जाती
है, कभी सामाजिक वैधिकता की। वास्तविक रूप से यह व्यक्ति तथा समाज में नए सन्तुलन की खोज है।

हमारे इस शोध विषय का उद्देश्य इसी खोज पर केंद्रित है। अतः समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान
इन दो अन्तर्जातिनुसार तथा 'प्रथम अध्याय' अन्तर्जातीय अवधारणात्मक 
अध्ययन के विकास के विषय बिनुमत साहित्यक मूल्यांकन जतिल
करने के साथ-साथ हिंदी जगत के पाठकों को हिंदी साहित्य सुझन की विविधायमानी में हो, जहाँ 
सुझन प्रक्रिया एवं भविष्यवाणी रचनात्मकता के प्रति सजग करने का प्रयास किया गया है।
इस सन्दर्भ में "स्वातंत्र्योत्सर हिंदी उपन्यासों का अन्तर्जातीय अवधारणात्मक अध्ययन, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान के विषय सन्दर्भ में" सविनय प्रस्तुत है।

'प्रथम अध्याय' अन्तर्जातीय अवधारणात्मक अध्ययन विषय प्रवेश है, जिसमें इस अध्ययन की 
आवश्यकता, साहित्य सुझन में इसके समावेश एवं अन्तरालम्ब की संक्षिप्त चर्चा करते हुए, 
अन्तर्जातीय अवधारणात्मक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान की भूमिका पर विस्तृत 
विचार किया गया है।

'द्वितीय अध्याय' विश्वक क्षेत्र का आधार लिए है, जिसमें स्वातंत्र्योत्सर हिंदी उपन्यास का 
चयन किया है और प्रमुख उपन्यासकार एवं उपन्यासों को दशक क्रम में आरंभित करके उपन्यास 
की विकास यात्रा की निर्देशन किया गया है। प्रत्येक दशक में लिए गए उपन्यासों में से कितने 
प्रमुख उपन्यासों का चयन करने का आधार समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान ही है अर्थात् जो उपन्यास 
इस अध्ययन भूमिका के लिए महत्वपूर्ण हैं, उन्हें का चयन किया गया है। एक दशक विश्व 
उपन्यासकारों को वर्णक्रमानुसार इसलिए बनाए गए हैं क्योंकि एक उपन्यासकार के अनेक उपन्यास 
हैं और जिनके प्रभाव के वर्ष अत्यधिक हैं। अतः वर्णक्रमानुसार उन्हें आरंभित करके देने से 
एक ही स्थान पर सभी उपन्यासों को आधारित किया जा सकता है।

'तृतीय अध्याय' में 'स्वातंत्र्योत्सर हिंदी उपन्यास माहिति के समाजशास्त्रीय अध्ययन करने 
वाले प्रमुख उपन्यासकार एवं उपन्यासों का विश्लेषण' किया गया है। इस विश्लेषण में उपन्यासकार का वर्णक्रमानुसार 
संयोजन किया गया है जिसमें समाजशास्त्रीय अध्ययन के क्षेत्र में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण बिनुमत 
का नियोजन किया जा सके।

'चतुर्थ अध्याय' 'समाजशास्त्रीय अध्ययन का प्रारूप' तृतीय अध्ययन के सामान्य बिनुमत 
पर निर्मित है, जिसके समाजशास्त्रीय अध्ययन का सिद्धांत निर्मित किया गया है। इस सिद्धांत निर्मिति
में समाजशास्त्रीय अध्ययन का विकास, समाजशास्त्रीय अध्ययन की परिभाषा, उपागम एवं घटक तत्व सभी को स्पष्टतया प्रस्तुत किया गया है, जिसमें आणामी शोधकर्ताओं को समाजशास्त्रीय अध्ययन करने में सुविधा हो सके। निर्मित प्रारूप के आधार पर प्रत्येक दशक में से एक उपन्यास का

व्यवहारिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जिससे अपने सिद्धांत की सार्थकता व्यवहारिक रूप में उदाहरण के तौर पर सिद्ध की गई है।

'पंचम अध्याय' में 'स्वात-न्योरत हिंदी उपन्यास साहित्य के महत्वपूर्ण अध्ययन करने वाले प्रमुख आलोचकों का विश्लेषण' किया गया है। इस विश्लेषण में आलोचकों का वर्णक्रमानुसार संयोजन किया गया है जिसमें महत्वपूर्ण विद्वानों का नियोजन किया जा सके।

'षष्ठ अध्याय' 'मनोवैज्ञानिक अध्ययन का प्रारूप' में पुनः सामान्य बिन्दुओं के आधार पर मनोवैज्ञानिक अध्ययन का विकास को चर्चा करते हुए मनोवैज्ञानिक अध्ययन का सिद्धांत निर्मित किया गया है। तदर्पण को नियत प्रत्येक दशक में से एक उपन्यास पर निर्मित सिद्धांत के आधार पर व्यवहारिक अध्ययन करते हुए अपने सैद्धांतिक अध्ययन को सत्यापित करने का विनिमय प्रयास किया गया है।

अंततः 'उपसंहार' में अपने अध्ययन की उपलब्धियों एवं सीमाओं को रेखांकित करते हुए भावी शोधधारियों के लिए महत्वपूर्ण बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया है।

स्पष्ट है कि प्रस्तावित शोध प्रबन्ध अन्तर्जानानुशासनात्मक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में एक महत्ती आकांक्षा को लेकर किया गया एक विनिमय प्रयास है। इस शोध प्रबन्ध में अन्तर्जानानुशासनात्मक अध्ययन की आवश्यकता, अन्तर्जानानुशासनात्मक अध्ययन का विकास, अन्तर्जानानुशासनात्मक अध्ययन का सिद्धांत तथा अन्तर्जानानुशासनात्मक अध्ययन का व्यवहार, इन सभी बिन्दुओं पर सन्तुलित अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अति आदरणीया शोध निर्देशिका, टॉटी नीलम अमर भिन्न जी, वरिष्ठ प्राध्यापिका, मनातकोता हिंदी विभाग, हंसराज महिला महाविद्यालय, जलंधर जो इस वक्त गोपीचंद आय्य महिला कॉलेजः अबोधर में जो कि दी. पी. आर. की एक प्रमुख संस्था है, की पाठ्यांश हैं, के प्रति में अवधारण कृतज्ञ हूँ। उनका आभार में शायद मे प्रकट नहीं कर सकती। उनके प्रति मेरे हद में विशिष्ट स्थान है। उनकी शिक्षा-वब्स्लाता, असीम स्नेह, अनन्त-रवैया, अग्राध प्रेमण व प्रोत्साहन ने इस शोधप्रबन्ध को आकार प्रदान किया है। सच तो यह है कि इस शोधप्रबन्ध का समय श्रेय उनहें को है। में तो
निमित मात्र रही हूं। प्रबन्ध को आद्रान्त पद्धतक उसकी धुटियों को दूर कर उचित परामर्श देने के लिए, उनकोन्योने जो कांग्र उठाए, वह मात्र ऋण निर्देश का विश्वय नहीं हो सकता। उनका मार्गदर्शन, कार्यतत्त्वात, अथवा प्रवृत्ति में लाभ प्रेरणा सीत बने हैं। वे अपने कार्यों में व्यस्त होकर भी मेरे लाभ बराबर समय देते रहे तथा सुझे पश्चिम द्वारा प्रतिसाहित करते रहे, इसके लिए मे उनकी ऋणी हूं। उनके महान व्यक्तित्व का सानिध्य मेरा परम सौभाग्य रहा है।

मेरे परम्पूर्व पिता जी श्री अभिनवी कोठड़ एवं आदरणीया मां श्रीमती नीतू कोठड़ तथा प्रिय भाई कुमार तरुण ने सदैव मुझे पढ़ने के लिए प्रतिसाहित कर शुभाशीष दिए। वे हमेशा मेरी सफलता से खुश होते थे जिसमें मुझे बल मिलता रहा है। उनके प्रति मे नतमस्तक हो अपनी सम्पूर्ण कृतज्ञता जापित करती हूं।

इस शोध प्रबन्ध की सम्पूर्णता मेरे आदरणीय श्रवण श्री श्रवण सिंह व साम स्रीमती हरप्रीत कौर के प्रतिसाहन और आलोचना सहेज का ही प्रतिफल है। उनका असीम धार्मिक और मूल्य सहयोग मेरे जीवन का महत्ता सौभाग्य रहा है। उनके प्रति मे श्रद्धांजलि हूं।

मेरे नरेश के सशक्त शिल्पकार तो मेरे प्रिय पति मनविन्दर सिंह रहे हैं जिन्होंने मुझे शिक्षा के बीहड़ से लगे वाले एक पर अविरल चलने के लिए सदैव प्रेरित किया है। उनके गहन प्रेम, प्रेरणा व प्रतिसाहन के कारण ही यह शोध-प्रबन्ध सम्पूर्ण हुआ है। किन शब्दों में मे उनके प्रति अपनी कृतज्ञता जापित करूँ?

मेरे नेत्र अभिनेत्वार सिंह के प्रति ब्रह्म कहूँ, उसी की मासूम बाल चुंबन ब्रह्मा तो मुझे इस शोध कार्य की सम्पूर्णता के लिए बार-बार प्रेरित करती रहीं। अन्यथा यह कार्य मेरे लिए लगभग असम्भव था। पुत्र तवहारे गान-रचे मनुष्य से अभिभूत रही हूं। तुम्हारी चिंता ऋणी हूं।

हिंदी विश्वास, गुल नानक देव विश्वविद्यालय के भाषा संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा जिनेन्द्र के प्रति मे विशेष रूप से कृतज्ञ हूं। समय-समय पर उनके अत्यन्त महत्वपूर्ण सुझाव और मार्गदर्शन मुझे मिलता रहा है। उनके अपार एवं असीम सहयोग के लिए मे उनके प्रति नतमस्तक हूं।

मे उन सभी उपन्यासकारों, लेखकों एवं आलोचकों की इदय से आभारी हूं जिनके अभिमानों का उपयोग इस ग्रंथ में प्रतिपक्ष व परिक्रमा रूप से किया गया है।

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन-गौर की लाइब्रेरियन श्रीमती रेपु सिंगला सदैव अन्यत्म भाव से पुस्तकें उपलब्ध कराकर मुझे मलुम सहयोग देती रहीं। मे उनकी अत्यन्त आभारी हूं।
पुस्तकालय के विभिन्न कर्मचारी कुमारी सरोज, कुमार मनजीत, श्रीमान यश जी की में हदय ये आभारी हूं, जो समृद्ध अभिशिषत संदर्भ पंथ उपलब्ध कराकर मुझे अपना आत्मीय सहयोग देते रहे।

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, आई-सी.एम.ए.वी. कॉलेज, जालम्बर, कन्या महाविद्यालय, जलालद्दौर के प्रति में अत्यन्त कृतज्ज हूं, जिनके पुस्तकालयों, उनके अध्यक्षों एवं विभिन्न कर्मचारियों ने बड़े बनें और सहजता से केवल पुस्तकालय के उपयोग की सुविधा ही नहीं प्रदान की अपितु दे रात तक पुस्तकालय में बैठकर अध्ययन करने की अनुमति भी प्रदान की। निम्नलिखित में इस शोध-कार्य को मुक्केबजारे में इस सबका सहयोग अपस्मारकी है।

में टंकन कार्य करने वाले हजरता बदर की अत्यन्त आभारी हूं, जिन्होंने सीमित समय में अत्यन्त आत्मीय हत के साथ इस शोध प्रबंध का टंकन कार्य सम्पन्न किया।

अतः में उन समस्त सहयोगियों एवं शुभार्हविकारकों के प्रति भी कृतज्ज हूं, जिनके सुझावों तथा सहयोग ने इस शोध-कार्य को सम्पन्न करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विनीता :-
निधि कोठड़